Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 105-112 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.11

Educational elements in the Poems of "Kalidas"

Rekha Nautiyal*

Department of Sanskrit SDM PG College Doiwala Dehradun

*Corresponding Author Email Mail: rekha.uki112@gmail.com

Received: 11.11.2021; Revised: 12.12.2021; Accepted: 21.12.2021
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract:

The talent of the great poet Kalidas is omnipresent.Kalidasa was the main Sanskrit language writer and playwright in the Gupta Empire in the third to fourth century. He composed on the basis of Pauranik tales and philosophy, in which various forms and basic elements of Indian life and philosophy are contained. He greeted mankind in his poetry, perhaps there is rarely any some subject which is untouched. It is known from the study of Kalidas's poetry that he had a lot of knowledge of Vedas, Puranas, Darshana, Gita, Ramaya, Mahabharata, Dharmashastra, verses etc. In the present research paper, a vision has been given on the educational, social, and cultural perspective in the poems of the great poet Kalidas.

Keywords: Kalidas, Poems, Educational, Cultural, Social, Educational Elements

कालिदास के काव्यों में शैक्षिक तत्व

रेखा नौटियाल

संस्कृत विभाग,
श0दु0म0रा0स्ना0महाविद्यालय
डोईवाला, देहरादून
Emial- rekha.uki112@gmail.com

सारांश

महाकवि कालिदास की प्रतिभा सर्वमुखी है। कालिदास तीसरी–चौथी शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की जिसमें भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व उल्लिखित है। उन्होंने अपने काव्यों में मानव जाति से सम्बद्ध शायद ही कोई विषय होगा, जिसे कविवर ने अछूता छोड़ा हो। भारत की सभ्यता संस्कृति कालिदास को अपना अभिव्यञजक पाकर कृत्य–कृत्य हो गयी। उनके काव्य ग्रन्थों में अपने देश का ही कल्याण नहीं अपितु पूरे विश्व का कल्याण निहित है। उनके काव्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उनको वेद, दर्शन, गीता, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, कामशास्त्र, व्याकरण शास्त्र, छन्दशास्त्र आदि ग्रन्थों का गहन अध्ययन था। मूलतः कालिदास को आनन्द ऐश्वर्य के कवि माने जाते हैं लेकिन उनकी रचनाओं में शिक्षा, शिक्षक, शिष्य, जीवन, समाज, आदि सभी विषयों से

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 105-112 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.11

सम्बन्धित आदर्शों की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में महाकवि कालिदास के काव्यों में शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर दृष्टिपात किया गया है।

कुंजी शब्द – शिक्षा, संस्कृति, आदर्श,

समाज, प्रकृति प्रस्तावना

वैदिक काल की समाप्ति के पश्चात् लौकिक संस्कृति में जो साहित्य रचा गया, उसे सामान्यतः पुराण इतिहास तथा काव्य की विविध श्रेणियों में विभाजित किया गया है । इन तीन वर्गों में काव्य सर्वोपरि माना गया है क्योंकि काव्य में एतिहासिक कथा के साथ–साथ कवि की कल्पना भी समाहित होती है। महाकवि कालिदास प्रतिभा के धनी थे। उन्हौंने रघुवंशमहाकाव्यम्, कुमारसम्भवममहाकाव्यम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोवर्शीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, आदि काव्यों की रचनाकर संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया । रघुवंशमहाकाव्यम् मेघदूतम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् कवि की प्रतिभा के अनमोल रत्न हैं। इन्हीं काव्यों से कवि विश्व महाकवि के सर्वोच्च सिहांन पर विराजमान हुए। कालिदास के ग्रन्थों के अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनको शास्त्रों का अगाध ज्ञान था । उनकी रचनाओं में मुख्यतयाः श्रृंगार की रस माधुरी अमृत की वर्षा करने लगती है । इसके साथ–साथ उनकी रचनाओं मं वियोगश्रृंगार, करूण आदि रसों का भी समायोजन है। इन सभी के साथ–साथ कालिदास की रचनाओं में जीवन के आदर्श, शिक्षा का महत्व, समाजिक शिक्षा, राजतंत्रीय शिक्षा आदि विषयों से सम्बन्धित आदर्शों की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है।

भारतीय संस्कृति के पोषक – महाकवि भारतीय संस्कृति के पोषक हैं, उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रेम के आदर्शों एवं सांसारिक मूल्यों को बखूबी अभिव्यक्त किया है। वे वास्तव में भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक थे। पूरे विश्व में कवि की कृतियों से भारत के प्रति आदर भाव जगा और भारत की एक अलग पहचान बनी। उन्हौंने व्यक्ति को संसार के दुःख–दर्द, और संघर्षो से अवगत कराने के लिए, प्रेम–वासना, इच्छा–आकांक्षा, सफलता और असफलता आदि को अभिव्यक्ति दी है। भारतीय संस्कृति को कवि ने अध्यात्म से जोडा है। महाकवि ने तीन महाकाव्यों की रचना की जिसमें रघुवंश महाकाव्य उन्नीस सर्गों का सबसे बडा महाकाव्य है। रघुवंश महाकाव्यम् में कवि ने भगवान श्रीराम के वंशजों का वर्णनकर समाज में एक आदर्श स्थापित किया। महाकाव्य के प्रारम्भ में ही भगवान शिव और पार्वती के स्मरण प्रत्यक्ष ही है–

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।[1]

(मैं वाणी और अर्थ की सिद्धि के निमित्त, वाणी और अर्थ के समान मिले हुए जगत् के माता–पिता पार्वती और शिव को प्रणाम करता हूँ)। यद्यपि कालिदास

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 105-112 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.11

शिव के परम भक्त थे, किन्तु उनका हिन्दु धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण था। उनका सभी धर्मों के प्रति समानता का भाव था।

सामाजिक यथार्थता – महाकवि कलिदास के काव्यों में सामाजिक तत्वों की अभिव्यक्ति स्पष्ट दिखाई पडती है। महाकवि के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अंक में शकुन्तला की विदाई के समय महर्षि कण्व की हृदयस्पर्शी मार्मिकता देखते ही बनती है। पिता के हृदय में वात्सल्य उमड आता है। महर्षि कण्व शकुन्तला की विदाई के समय इस प्रकार दुःखी होते हैं जैसे कोई गृहस्थ अपनी कन्या के विवाह के समय दुःखी होते हैं –

यस्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठःस्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषचिन्ताजडंदर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेष
दुःखैर्नवैः ।।[2]

चतुर्थ अंक में प्रेम, अनुराग, संवेदना का जो प्रवाह प्रवाहित किया है उससे यह अंक अमर हो गया। भारतीय संस्कृति की यह झलक प्रसंशनीय हो गयी है जहाँ पर महर्षि कण्व द्वारा पुत्री शकुन्तला को यह व्यावहारिक ज्ञान दिया कि तुम ससुराल में जाकर श्वसुर आदि गुरूजनों की सेवा करना, सपत्नियों के साथ प्रिय सखी जैसा व्यवहार करना, पति द्वारा अपमानित होने पर भी रोष से उनके विरूद्ध आचरण न करना, सेवकों के प्रति उदारता और अपने भाग्य पर अभिमान नकरना। इस प्रकार का आचरण करने वाली स्त्रियाँ गृहणी पद को प्राप्त करती है इसके विपरीत आचरण करने वाली स्त्रियाँ कुल का नाश करने वाली होती है –

शुश्रुषस्व गुरू कुरून् कुरू प्रियसखिवृत्तिंसपत्निजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।

भुयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनीः
यान्त्येव गृहिणिपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।।[3]

भारतीय गृहणी का आदर्श इससे अधिक अच्छे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता है। और भी जब शकुन्तला पति के घर जा रही होती है तो महर्षि क व अपने शिष्य से कहते हैं कि आप राजा से कहना कि संयम रूपी धन वाले हम तपस्वियों का, अपने उच्च कुल का और तुम्हारी और इस शकुन्तला के किसी भी प्रकार के भाई बंधुओं के प्रयास के बिना उस प्रेम व्यापार का अच्छी प्रकार से विचार करके तुम स्त्रियों में सबके समान गौरव के साथ देखा जाना चाहिए। इसके आगे भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिए।

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 105-112 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.11

शैक्षिक तत्व – महाकवि के काव्यों में शिक्षक और शिक्षार्थी के आदर्श सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। मालविकाग्निमित्रम् में तीन प्रकार के शिक्षकों के विषय में बताया गया है, जिसमें तीसरे प्रकार का शिक्षक श्रेष्ठ माना गया है जो अपने विषय में पारगंत हो और उस ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में समर्थ हो। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में कवि कालिदास कण्व ऋषि के माध्यम से कहते हैं–**"सुशिष्यपरिदत्ता विद्येव अशोचनीया संवृता"**। अर्थात् अच्छे शिष्य को दी गयी विद्या शोचनीय नहीं होती है। अच्छा विद्यार्थी वही है, जो गृहीत विद्या को आगे बढाये और उसे और अधिक विस्तृत करे।

शिक्षा के सम्बन्ध में कवि ने अपने विचारो में स्पष्ट
लिखा है–

"उपदेशं विदुः शुद्धं सन्तस्तमुपदेशिनः।
श्यामाय ते न युष्मासुयः काञचनमिवाग्निषु।।[4]

अर्थात् सच्ची शिक्षा की कसौटी यह है कि जैसे अग्नि में डालने से सोना काला नहीं पड़ता, वैसे ही यह परीक्षाकाल में मन्द नहीं होती। शिक्षक वही सर्वश्रेष्ठ है "जिसमें विद्या तथा शिक्ष ा की योग्यता दोनों ही हो।[5] कालिदास का कथन है कि बालकों का मस्तिष्क केवल कोरी पटरी नहीं है, वे संसार में जन्म लेने पर उन प्रवृत्तियों, क्षमताओं, रूचियों को अपने भीतर लिए रहते है, जिन्हें उन्होंने पूर्वजन्मों में गृहीत किया हैं। कुमारसम्भवम् में माता पार्वती के विषय में कवि का कथन है–

"तां हंसमाला शरदीव गंगां महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तजन्मविद्याः।।[6]

जब अत्यन्त तीव्र बुद्धिवाली पार्वती ने शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया, तब उस समय पूर्वजन्म की सभी विद्याएँ उन्हें वैसे ही स्मरण हो आईं जैसे शरद ऋतु के आने पर गंगा में हंस आ जाते है अथवा जैसे अपने आप चमकने वाली जड़ी–बूटियों में रात में चमक आ जाती है। शिष्य के गुणों की चर्चा करते हुए कवि के द्वारा बताया गया कि चतुर शिष्य गुरू से प्राप्त शिक्षा को अवश्य प्रसारित करता है। अर्थात् उसकी शिक्षा फलीभूत होती है।

अवन्ध्ययत्नाश्च वभूवुरत्र ते क्रिया हि
वस्तुपहिताप्रसीदति"।[7]

इस तरह शिष्य को विद्या ग्रहण करते समय गुणग्राही होना चाहिए। इससे गुरूओं का परिश्रम सफल हो जाता है। गुरू की हमेशा से ही यही अभिलाषा रहती है कि उसका शिष्य ज्ञान कौशल

कला में प्रवीण हो जाए और वह ज्ञानवान, बुद्धिमान बनकर अपने ज्ञान के प्रकाश से जगत की अज्ञानता दूर करे। मालविकाग्निमित्रम् में कवि ने स्पस्ट किया है–

"पालविशेषे न्यस्तं गुणान्तर व्रजति शिल्पमाधातुः।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ता फलतां
प्योदस्यः।।[8]

अर्थात् गुरू की कला विशिष्ट शिष्य में पड़कर और सुन्दर हो जाती है, जैसे मेघ का जल सागर की सीपी में पहुँचकर मोती बन जाता है। जब शिक्षक को एक चतुर शिष्य प्राप्त होता है, तब वह उसके उपदेश को इतनी जल्दी तथा सुन्दरता से सीख लेता है कि जान पड़ता है कि विद्यार्थी ही शिक्षक को बदले में शिक्षा देता है। मालविकाग्निमित्रम् में कवि कहते हैं—

यद्यत् प्रयोगविषये भाविकमुपदिश्यते मया तस्यै।
तत्तद्विशेषकरणात् प्रत्युपदिशतीव मेबाला।[9]

कालिदास जी ने एक आदर्श शिक्षक की सुन्दर परिभाषा लिखी है। उनका मानना है कि एक श्रेष्ठ शिक्षक ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थियों को पढाने मे चतुर होता है। वह विद्या के ग्रहण में तथा विद्या के संक्रमण में समर्थ होता है—

शिष्य क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रान्तिरन्यस्य
विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणा धुरी प्रतिष्ठापयितव्य ।।[10]

विद्यार्थियों को भी महाकवि ने अपनी शिक्षा को सफल बनाने के हेतु अनेक नियमों को बताया है। विद्यार्थी को सर्वप्रथम ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिए। तत्पश्चात नित्य, नैमित्तिक कर्मकर अध्ययन करना चाहिए। विद्यार्थियो को चाहिए कि वे अपने गुरू ष्की आज्ञा का उल्लघंन ना करें "आज्ञा गुरू ाां ह्यविचारणीया" क्योंकि यदि गुरू के प्रति अनादरभाव दिखलाया जायेगा, तो वह उस व्यक्ति के कल्याण में महान बाधक बनेगा।

प्रकृति प्रेम—संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास जी ने पर्यावरण को अपने काव्यों में प्रमुख स्थान दिया है । अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक, ऋतुसंहार, मेघदूत आदि काव्यों में प्रकृति का मानव के साथ सम्बन्ध प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। रघुवंश महाकाव्य में कवि का कला का स्वरूप अधिक व्यापक दिखाई पड़ता है। इस काव्य में कवि ने प्रकृति के जीवन को व्यक्तिगत मानव जीवन के साथ ही नहीं ,अपितु राष्ट्र के वृहतर जीवन के साथ सम्बन्ध दिखाया गया है। कुमारसम्भवम काव्य में कालिदास ने हिमालय को देवतात्मा कहा है। उन्होंने अपने काव्य में लिखा है कि उत्तर दिशा मे हिमालय नाम का पर्वतराज है जो कि पृथ्वी के मानदण्ड के समान स्थित है। जो हिमालय हमारे देश की रक्षा कर रहा है। यह

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 105-112 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.11

हिमालय देवस्वरूप हैं –

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो
नामनगाधिराजः।
पूर्वापरो तोयनिधि वगाह्यस्थित पृथिव्या इव
मानदण्डः।।[11]

अर्थात् उत्तर दिशा में देवता की आत्मा वाला हिमालय नामक पर्वतराज है, जो पूर्वी और पश्चिमी समुद्र में प्रवेश करके पृथ्वी के मानदण्ड के समान स्थित हैं। यहाँ पर कवि ने अचेतन पर्वत पर चेतन व्यवहार की कल्पना की है। कुमारसम्भवम् में कवि ने हिमालय को मानव जाति की धरोहर माना है। उनका मानना है कि हिमालय सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। हिमालय हमारे देश की रक्षा करता है। हिमालय अनेक औषधियों एवं रत्नों का उत्पादक है–

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न
सौभाग्यविलोपिजातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दो
किरणेष्विवाङ्कः।।[12]

इस प्रकार कवि ने हिमालय को अनेक रत्नों और औषधियों का उत्पादक माना है। प्रकृति चित्रण का एक और उदाहरण –

भागीरथीनिर्झरसीकराणां वोढा मुहुः
कम्पितदेवदारूः।
यद्वायुरन्विष्टमृगैः किरातै– रासेव्यते
भिन्नशिखण्डिबर्हः।।[13]

अर्थात् हमारी जो पवित्र गंगा नदी है वह भी हिमालय से निकलती है। गंगा का जल पवित्र एवं स्वच्छ है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् कवि का एक अनुपम रत्न है। जिसमें प्रकृति के अनुपम दृश्य कवि ने अपने काव्य में प्रस्फुटित किये हैं। चतुर्थ अंक में तो कवि ने प्रकृति और मानव को
एकदम पास ला दिया है–

उदगलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।

अपसृतपा डुपत्रा मुच्यन्त्यश्रूणीव लताः।।[14]

शकुन्तला की विदाई से दुःखी होकर हरिणियों ने कुश खाना छोड़ दिया, मारों ने नाचना छोड़ दिया और लताओं से पीले–पीले पत्ते इस प्रकार झड़ रहे थे,मानों उनके आँसू गिर रहें हों। कालिदास के काव्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्हौंने मानव और प्रकृति को एक–दुसरे का पूरक बताया है। महाकवि ने अपने ग्रन्थों में स्पष्ट कर दिया है कि यदि मानव को अपने पर्यावरण को बचाना है तो प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि हमें वन–वृक्षों, पशु–पक्षियो, जीव–जन्तुओं, नदी–झरनों के महत्व को समझें और उनकी रक्षा करें।

निष्कर्ष– इस तरह महाकवि कालिदास राष्ट्रीय कवि के रूप में भारतीय संस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं । भारतीय सभ्यता संस्कृति उनके काव्यों में मुखरित हुई है। भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में उन्हौंने भारतीय संस्कृति को दर्शाया है। उनके काव्यों में राष्ट्रीय भावना, विश्व कल्याण की भावना के साथ–साथ पग–पग पर मानव मात्र को सदा प्रेरणा और शिक्षा प्रदान करते रहते हैं। इस प्रकार महाकवि कालिदास के शिक्षण विषयक विचार नितान्त उच्च, उपादेय तथा उत्साहवर्धक हैं। कालिदास की इस शिक्षा को हमारे भावी शिक्षक, शिष्य हृदयङम कर लें तो देश और समाज की विषमताएं दूर हो जायेंगी। सभी जनों को चाहिए कि उनकी शिक्षा से प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को धन्य करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रघुवंशमहाकाव्यम् 1/1
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/6
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/18
4. माल0 2/9
5. माल0 1/16
6. कुमारसम्भवम् 1/30
7. रघुवंश 10/79
8. माल0 5/6
9. माल0 1/15
10. माल0 1/16
11. कुमारसम्भवम् 1/1
12. कुमारसम्भवम् 1/3
13. कुमारसम्भवम् 1/15
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/11